रात्रिक्लास 30/4/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

बच्चे अनुभव सुनाते हैं ना। यह भी बच्चा अनुभव सुनाते हैं; क्योंकि बाप भी, दादा भी हैं। कहते हैं स्वप्न में भी ऐसे ख़्याल न था बाप आकर करके हमको विश्व का मालिक बनावेंगे। कब भी किसको ख़्याल नहीं आ सकता। इस जन्म की बात है ना। भले पूजा भी करते थे; परंतु वह आकर हमको पढ़ाते हैं। हम विश्व के मालिक यह बनते हैं यह ख़्याल में न था। ओ हो, बेहद का बाप2 भल हम ...ना. की कथ(ा) सुनते थे ; परन्तु जैसे कॉमन। यहां तो बच्चों को निश्चय है हम बेहद के बाप से सारे विश्व का राज–भाग लेते हैं। सबसे प्यारा ते प्यारा है। वह कथाएं मनुष्यों से सुनी। यह तो स्वयं बाप है। उनके सिवाय कब भी मनुष्य नर से नारायण बन नहीं सकता। जब तक वह आये सच्ची–2 युक्ति बतावे। मीठे–2 रूहानी बच्चों को डायरैक्शन मिलती है मुझे निरन्तर याद करने का पुरुषार्थ करो तो योग अग्नि से पाप भस्म हो जावेंगे। फिर तुम मनुष्य से नर, नर से नारायण बन जावेंगे। कितना अच्छी तरह से तुम बच्चों को समझाता हूँ। तुम अमरलोक के मालिक बन रहे हो। निर्वाणधाम को अमरलोक नहीं कहा जा सकता। वह तो है घर। अमरलोक भी है, मृत्युलोक भी है। बच्चों को यह मालूम है। तुम ड्रामा के सभी एक्टर्स के पार्ट को जान गये हो। बाप से पूछ भी नहीं सकते। बाप आपे ही अपना परिचय देते हैं। सारी रचना का राज़ समझाते हैं। भक्ति एकदम दुर्गति में ले जाती है। बाप आकर सद्गति में ले जाते हैं। फ़र्क का तुमको मालूम पड़ा है। सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। तुम बच्चे सुमिरण करते हो। तब ही अथाह सुख की फीलिंग आती है। यह है सारी बुद्धि की बात। स्वदर्शनचक्रधारी कहने से ही बुद्धि में सारा आ जाता है सेकण्ड में। हम स्वदर्शनचक्रधारी हैं। औरों को भी समझाते रहते हैं। तुम बच्चे हाइएस्ट नॉलेज प्राप्त कर रहे हो। आगे नॉलेज नहीं थी। अभी बाप कहते हैं बच्चे धैर्य धरो। बाकी थोड़ा समय है। माया के तूफान हैं। छोटी दीवे हैं उनको बुझाने की कोशिश करती है। तुम बाप को याद करो तो पौं बारह है। ....(फु)ल पास हो जावेंगे; परंतु माया बिल्ली घड़ी–2 भुला देती है। बाप को भूले और लगी माया की चाट। माया है इस हण–खण। सेकण्ड में जीवन मुक्ति। फिर एक सेकण्ड में दुर्गति हो जाती। ऐसी माया चमाट मारती है तो जो बिल्कुल ही दुर्गति में ले जाती है। की कमाई चट हो जावेगी। परमपिता परमात्मा से प्रतिज्ञा भी करते हैं, कोर्ट में झूठा कसम उठाते हैं ना। ईश्वर को जानते ही नहीं फिर कसम उठाने से क्या हुआ? यहां तो बाप का परिचय मिलता है। कसम उठाने की बात ही नहीं। बाप टीचर हैं, पढ़ा रहे हैं। टीचर का कसम उठाया जाता है क्या? भगवान का कसम कहते हैं। तो तुम मीठे–2 बच्चे आधा कल्प भक्ति करते हो। भक्ति करते–2 जैसे हिर जाते हैं। भक्ति से ही दुर्गति। कहते हैं भगवान कोई न कोई वेश में आकर वर्सा देंगे। अभी तुमको पता पड़ता है। लाखों वर्ष की बात नहीं। लाखों वर्ष समझ मनुष्य घोर अंधियारे में पड़ गये हैं। गाया हुआ है अतिइन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो; परन्तु वह है पिछाड़ी की फाइनल स्टेज। अभी मुसाफिरी कर रहे हो। अफ्रीका से अमेरिका जाते हो। काली दुनियां से गोरे दुनियां में जाते हो। अफ्रीकन काले होते हैं ना। तुम समझते हो हम लौट रहे हैं। बाप को याद कर हम पवित्र बन जावेंगे। नहीं तो डोरापा पावेंगे हमको पता नही मिला; इसलिए कहा जाता है एरोप्लेन से पर्चा गिराओ। तुम बच्चों को बहुत भारी ज़िम्मेवारी है। बाबा बैठ थोड़े ही सभी को इत्तला करेंगे। प्रेरणा आदि की बात नहीं। कैसे भी कर सभी को पैगाम पहुँचाना है। तुम बच्चों के आगे वह महाऋषि हो, बड़े ते बड़ा धनवान हो, पढ़ा हुआ हो। तुम्हारे कुछ भी नहीं। तुमसे ऊँच कोई हो न सके। सभी ग़रीब हैं, मरे पड़े हैं। बाबा जन्म–जन्मांतर के लिए जीयदान दे रहे हैं। बाप यहां समझाते हैं तो फ्रेशनेस रहती है। अपने गांव में जाते हो फिर ठंडे हो जाते हो। भल वहां मुरली भी सुनते हो; परंतु संग कहां। यहां तो संग मे हो ना। हाँ, अलबत कोई कम पढ़ते हैं। यहां फालतू संसारी आदि की बात न सुनना चाहिए। जो बहुत अच्छी सर्विस करते हैं उनका संग करना चाहिए।

जो बैठ कर रिफ्रेश करे। अच्छे–2 बच्चों को बाबा कहते हैं जाकर क्लास कराओ। महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे तो हैं ना। महारथियों का काम है रिफ्रेश करना। न करते हैं तो गोया आज्ञा का उल्लंघन करते हैं। नाफरमानबरदार हो जाते हैं तो कितना डण्ड पड़ता है; क्योंकि राइट हैण्ड में धर्मराज भी है ना। आत्मा भी और काया भी कंचन बने; इसलिए सबेरे ड्रिल होती है। स्टूडेन्ट लाइफ है सोर्स ऑफ इनकम। इनमें भी तुम्हारी स्टूडेन्ट लाइफ है ही बेस्ट लाइफ। यह है दी बेस्ट पढ़ाई जो तुम पढ़ते हो। बोलो, हम राजयोग पढ़ते हैं। यह है दी बेस्ट। भगवान आकर राजयोग सिखाते हैं। इस कुल के जो होंगे वह समझेंगे। बाकी तो समझ न सके। तुम दी बेस्ट टीचर हो। जिनको दी बेस्ट पढ़ाई पढ़ाकर दी बेस्ट बनाते हो। तुम स्थापना कर रहे हो बिगर कोई हथियार पवार के। सिर्फ़ याद की यात्रा से। पढ़ाई तो कॉमन हो जाती है। बाप, टीचर, सदगुरू को याद करना होता है। एवर हेल्दी बनना है ना। जैसे कन्या को दहेज दिया जाता है। पेटी में सभी दिया जाता है। तुम बच्चों को तो बाप 21 जन्मों के लिए दहेज देते हैं विश्व का मालिकपने का। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। किसको देते हैं? बच्चों को। आत्माओं को। दुनियां की रसम–रिवाज़ और है। तुम संगमयुगी ब्राह्मणों की रमस और। सभी को खुशी है दहेज ले सकते हैं। सारा पढ़ाई पर मदार है। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना मिलेगा। पुरुषार्थ तुमको करना है। आर्शीवाद तो नहीं करूँगा। सभी ऐसे बन जावेंगे। पुरुषार्थ अपना करना है। अच्छा।

तुम अनगिनत बार बाप से मिले हो। बादशाही ली है और गंवाई है। अनगिनत बार गंवाते और लेते रहेंगे। यह भी अभी तुम समझते हो। बाप कहते हैं मीठे रूहानी सिकीलधे बच्चों पुरुषार्थ करो। गफ़लत मत करो। माया बहुत गफ़लत में डालती है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। ज्ञान युक्त याद चाहिए। अच्छा , मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप–दादा का याद प्यार गुडनाइट और नमस्ते।